कथा सरिता

राजा देवकीर्ति युद्धकला में अत्यंत निपुण थे। अनेक महारथियों को उन्होने पराजित किया था। दूसरों को हराने का, नीचा दिखाने का अभिमान सबसे बुरा होता है। इसी अभिमान में एक दिन वे अपने गुरू से मिलने पहुँचे और दंभपूर्ण स्वर में बोले - 'गुरूदेव! मेरा स्वागत करें, आज मैं सब योद्धाओं को हराकर, आपका नाम ऊँचा कर यहाँ लौटा हूँ।'

बड़ा पराक्रम

उनके इस व्यवहार पर उनके गुरू हँसे और बोले - 'देवकीर्ति, तूने सबको पराजित किया, पर क्या स्वयं को पराजित कर पाया?' देवकीर्ति को यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। वे बोले -''गुरूदेव! क्या अपने को भी कोई पराजित कर सकता है?'' गुरूदेव बोले -''बेटा! असली युद्ध तो अपने विरूद्ध ही लड़ा जाता है। जो अपने अहंकार को पराजित कर लेता है, उसका पराक्रम ही सबसे बड़ा है। अपनी दुष्प्रवृत्तियों को नियंत्रित कर लेना ही साधना है और अपने व्यक्तित्व का परिष्कार कर लेना ही सिद्धि है।''यही सत्य हम सबके जीवन पर लागू होता है।

इसी कारण....

पहचान पाने की व्याकुलता प्राय: सभी में होती है। हर कोई इसके लिए अपने-अपने ढंग की कोशिश करता है। कोई धन कुबेर बनने के लिए जतन करता है, कोई उच्च पद के लिए जुगत करता है। किसी के प्रयास सम्मान के लिए होते हैं, तो कोई इसके लिए बहुतेरी उपाधियां बटोरता है। कुल मिलाकर जितने लोग, उतने प्रयास। हालांकि इन सभी प्रयासों का मकसद यही होता है कि ज्यादा से ज्यादा लोग हमें पहचानें और हमारी अपनी पहचान औरों से बेहतर हो।

इन सभी कोशिशों में लगे लोग यह भूल जाते हैं कि उनके पास क्या है उससे नहीं, बल्कि वे स्वयं क्या हैं, उससे उनकी सही पहचान होती है। यथार्थ में वही सच्ची संपदा है, वही उनका सही परिचय व पहचान है। जो उसे सँभाल लेता है, वह सब सँभाल लेता है।

इस सम्बन्ध में कथा महात्मा कबीर की है, वे अपने बेटे कमाल को पहचान का सही पाठ पढ़ाने के लिए मार्ग के बीच में खड़े थे। उस समय वहाँ से बांदोगढ़ के राजा की सवारी निकलने वाली थी। मार्ग को निर्विघ्न करने के लिए कुछ सैनिक वहाँ आए, उन्होने कबीर को धक्का दिया और बोले -'बूढ़े! तुझे समझ में नहीं आता कि महाराज की सवारी निकल रही है।' इस पर कबीर हँसे और बोले -''इसी कारण।'' बाद में सैनिकों का अधिकारी आया और बोला -''मार्ग से हट जाओ, महाराज की सवारी आने वाली है।'' कबीर फिर हँसकर बोले -''इसी कारण।''

इसके पश्चात राजा के मंत्री आए उन्होने उनसे कुछ नहीं कहा और उन्हें बचाकर अपने घोड़ों को ले गए। इस पर कबीर फिर हँसते हुए बोले -''इसी कारण।'' और तब बांदोगढ़ के महाराज स्वयं आए, उन्होने अपनी सवारी से उतरकर महात्मा कबीर के पाँव छुए, फिर चले गए। इस पर कबीर ठहाका मारकर हँसे और बोले -''इसी कारण।'' अब कमाल से रहा न गया, उन्होने उनसे हँसने और ''इसी कारण'' कहने की वजह पूछी। इस पर कबीर ने कहा -'मनुष्य के व्यक्तित्व व आचरण से उसकी पहचान प्रकट होती है। मनुष्यों में परस्पर भेद भी इसी कारण होता है। जो अपने व्यक्तित्व व आचरण की निरंतर समीक्षा करते हुए इसे विकसित करते हैं, वे अपनी पहचान को भी स्वत: विकसित कर लेते हैं।

चाय और कप

लम्बे अर्से बाद चार पुराने दोस्तों की एक बार फिर मुलाकात होती है। चारों ही समाज में सफल लोगों की श्रेणी में आते हैं। वे ऊँचे पदों पर हैं और अच्छी तनख्वाह व सुविधाएं पा रहे हैं। वे चारों दोस्त अपने पुराने शिक्षक जो न सिर्फ किताबी, बल्कि व्यावहारिक ज्ञान देने के लिए भी विख्यात रहे हैं, से मिलने जाते हैं।

शिक्षक के निवास पर सभी की चर्चा शुरू होती है। सभी अपनी-अपनी शिकायतें व मुश्किलों की चर्चा में ही सिमट जाते हैं। चारों खुद को दूसरों से ज्यादा तनाव का शिकार और काम के बोझ से दबा, बेचारा साबित करने में लगे हुए थे।

मंद-मंद मुस्कराते हुए शिक्षक उन सबकी समस्याएं ध्यान से सुन रहे थे, पर उन्होने एक बार भी हस्तक्षेप नहीं किया था। अचानक शिक्षक ने कहा कि मैं तुम सभी को चाय पिलाता हूँ। थोड़ी देर बाद शिक्षक उन चारों के लिए एक केतली में गर्मा-गर्म चाय लेकर आए, तो उनके दूसरे हाथ में एक ट्रे भी थी, जिसमें ढेर सारे कप रखे हुए थे। किस्म-किस्म के कप थे। कुछ सस्ते और साधारण, तो कुछ बेहद महंगे और आकर्षक नजर आने वाले। चारों छात्रों ने अपनी-अपनी पसंद के कप छांटे और उनमें चाय उड़ेलकर चुस्कियां लेने लगे। अब शिक्षक ने बोलना शुरू किया, 'क्या आप लोगों ने एक बात पर ध्यान दिया? आप चारों ने महंगे और आकर्षक कप उठाए हुए थे और साधारण कप ट्रे में ही छोड़ दिए गए हैं।' छात्रों ने अपने हाथों की तरफ देखा, यह बात सही थी। शिक्षक ने आगे कहा, 'इस बात में कोई हैरानी नहीं कि हम सभी जिन्दगी में सबसे अच्छे का ही चयन करना चाहते हैं। यह एक सामान्य प्रवृत्ति है। पर क्या आप जानते हैं कि यही बात आपकी सारी समस्याओं और तनावों की जड़ है? आप सभी के लिए चाय और उसका स्वाद महत्वपूर्ण था, पर आप लोगों ने पूरा ध्यान कप छांटने और दूसरों के कप से अपनी तुलना करने में लगाया।'

छात्रों के लिए गुरू का यह पाठ नया और अनोखा था। वे उनकी बातें ध्यान से सुनने लगे। शिक्षक ने कहा, 'एक पल के लिए अगर मान लें कि चाय जीवन है और नौकरी, पैसा, समाज में प्रतिष्ठा जैसी बातें कप के समान हैं। ऐसे में, वे जिन्दगी को थामे रखने के साधन मात्र हैं। इनसे हमारे जीवन की गुणवत्ता नहीं बदल जाती, ठीक उसी तरह जैसे कप से चाय का स्वाद नहीं बदलता। खुशहाल जिन्दगी साधनों की प्राप्ति पर निर्भर नहीं है। वास्तव में, अधिकांश मौकों पर हमारा पूरा ध्यान कप हो लेकर होता है और इस चक्कर में हम चाय का स्वाद लेने यानी जिन्दगी जीने से भी वंचित रह जाते हैं।' दोस्तों ने एक दूसरे की तरफ देखा और मुस्करा दिए। उन्होने आज सबसे बड़ा सबक हासिल किया था।

शिक्षा -जिन्दगी भरपूर जीने के लिए है। इसलिए हमारा पूरा ध्यान खुश रहने पर होना चाहिए, न कि सुविधाएं जुटाने और उनके लिए चिंता करते रहने पर।

कर्त्तव्य

प्रसिद्ध बंगाली पत्रिका 'प्रवासी' के संपादक रामानंद चट्टोपाध्याय एक बार गंगा तट पर पैर फिसलने से नदी में गिरकर तेज बहाव में बहकर डूबने लगे। एक कुशल तैराक युवक ने तुरंत पानी में कूदकर उनको बचा लिया। कुछ दिनों बाद वही युवक उनके कार्यालय में अपनी कुछ, कविताओं को 'प्रवासी' में छापने की जिद करने लगा। जब रामानंद ने कविताएं निम्न स्तर की पाकर मना किया, तो वह उन्हें खरी-खोटी सुनाते हुए कहने लगा, ''मैंने आपकी जान बचाई और आप मेरी कविताएं भी नहीं छाप सकते?''

रामानंद ने कहा, 'संपादक होने के नाते श्रेष्ठ रचनाओं का चयन कर उन्हें पाठकों के सामने लाना मेरा कर्त्तव्य है। तुम चाहो, तो मुझे फिर से गंगा में डुबो सकते हो। वह मुझे स्वीकार है, परन्तु अपने पाठकों के साथ विश्वासघात व छल करना स्वीकार नहीं।'

कर्त्तव्य के प्रति उनकी ऐसी अटूट निष्ठा को अनुकरणीय मानते हुए सभी को पूरी निष्ठा से पूरा करने की क्षमता पाने के लिए दुआ करें।

चूरू। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा चल रही ईश्वरीय सेवाओं के बारेमें बताने के बाद राजस्थान की पूर्व मुख्य मंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे, ओम शान्ति मीडिया को ध्यानपूर्वक पढ़ते हुए साथ में हैं ब्र.कु. सुमन।

गोरखपुर। जे.पी. गुप्ता, आई.ए.एस. कमीश्नर गोरखपुर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. पारूल साथ में मेरू गुप्ता दिखाई दे रही हैं।

डुंगरपुर। ब्र.कु. विजयलक्ष्मी को प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित करते हुए गिरीश पानेरी, सचिव, भारत विकास परिषद, साथ में संरक्षक शंकर सोलंकी, अध्यक्ष गुलाब शर्मा तथा ब्र.कु. पदमा।

वाली-डेन्पासर-इन्डोनेशीया। 'वर्ल्ड हिन्दु सम्मीट' में बीस देशों से आए प्रतिनिधियों द्वारा कार्यक्रम के उद्घाटन के पश्चात मीनीस्टर फॉर रिलीजन, सूर्याधर्मा अली, डॉ सूशीलो बाम्बंग, के साथ ब्र.कु. मीरा, ब्र.कु. जानकी तथा धार्मिक प्रतिनिधि दिखाई दे रहे है।

वणी -चंद्रपुर। नशामुक्त अभियान का दीप प्रज्जवलन कर उद्घाटन करते हुये नगरपरिषद की अध्यक्षा अर्चना, ब्र.कु. कुसुम, एस.डी.एम, डॉ. सचीन पर्व, ब्र.कु. कुंदा तथा अन्य।

विलासपुर -सिरगिट्टी। 'यौगिक कृषि का महत्व' कार्यक्रम में दीप प्रज्जवलन कर उद्घाटन करते हुये ब्र.कु. राजू, ब्र.कु. भारती, विरेन्द्र अग्रवाल, ब्र.कु. कांता।